

# अमरीका पहुँचने में कितने दिन और?

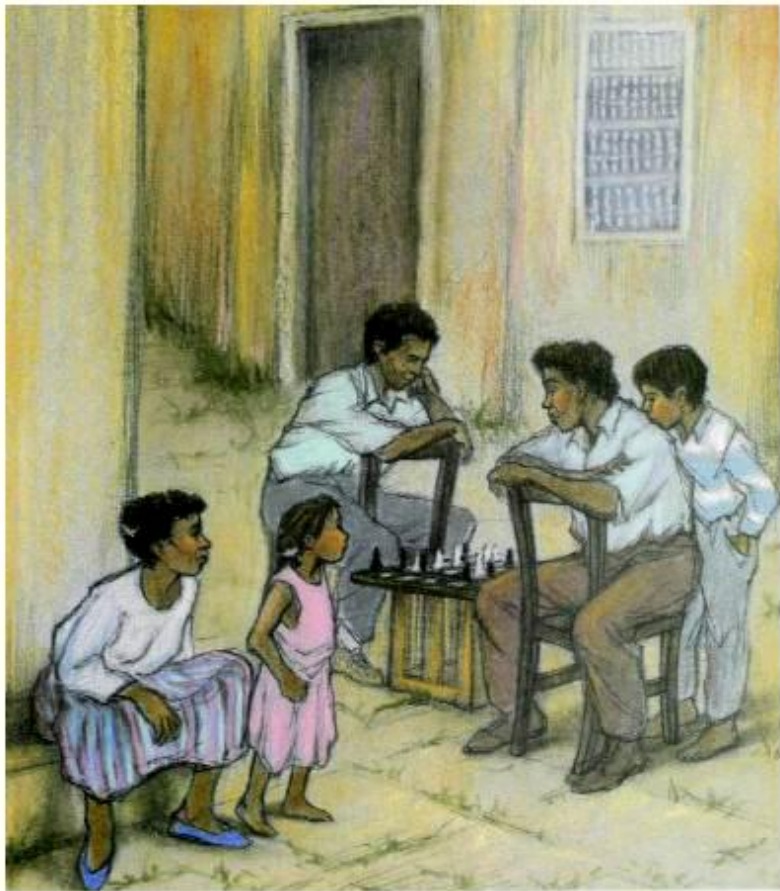
ईव, चित्र : बेथ, हिंदी : विदूषक



# अमरीका पहुँचने में कितने दिन और?



ईव, चित्र : बेथ, हिंदी : विदूषक



वैसे हमारा शहर बहुत शांत और अच्छा था.  
पर अक्टूबर की एक रात को वहां सैनिक आए.

माँ ने मुझे और मेरी छोटी बहन को पलंग ने नीचे छिपा दिया.  
जब मैंने पलंग के नीचे से झाँककर देखा तो मुझे माँ की काली  
चप्पलें और सैनिकों के मिट्टी से लदे जूते दिखाई दिए.







जब सैनिक चले गए तो पिताजी ने कहा, “हमें यहाँ से फ़ौरन निकल पड़ना चाहिए.”

“क्यों,” मैंने पूछा.

“बेटा, क्योंकि हमारा सोच और उन लोगों का सोच बिल्कुल अलग है. चलो, जल्दी करो!”

पिताजी ने सख्ती से कहा कि हम एक जोड़ी कपड़ों के अलावा अपने साथ और कुछ नहीं ले जा सकते थे.

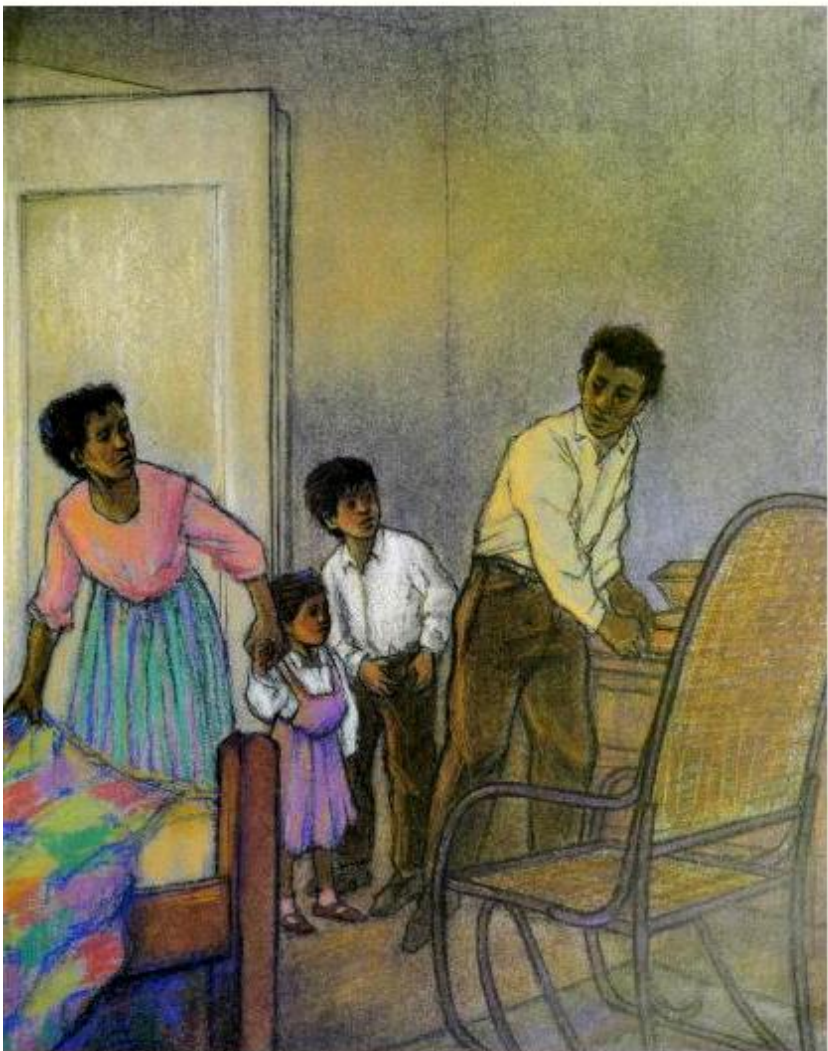
माँ ने रोते हुए कहा. “मैं अपनी चीज़े कैसी छोड़कर जा सकती हूँ?

उस कुर्सी पर बैठकर मैंने अपने बच्चों को दूध पिलाया है?

उस पलंग की चादर पर मेरी माँ ने अपने हाथ से खुद कढ़ाई की है?”

“कुछ भी नहीं,” पिताजी ने कहा. “हम अपने साथ सिर्फ़ पैसे लेकर जायेंगे जिससे कि हम अमरीका पहुँच सकें.”

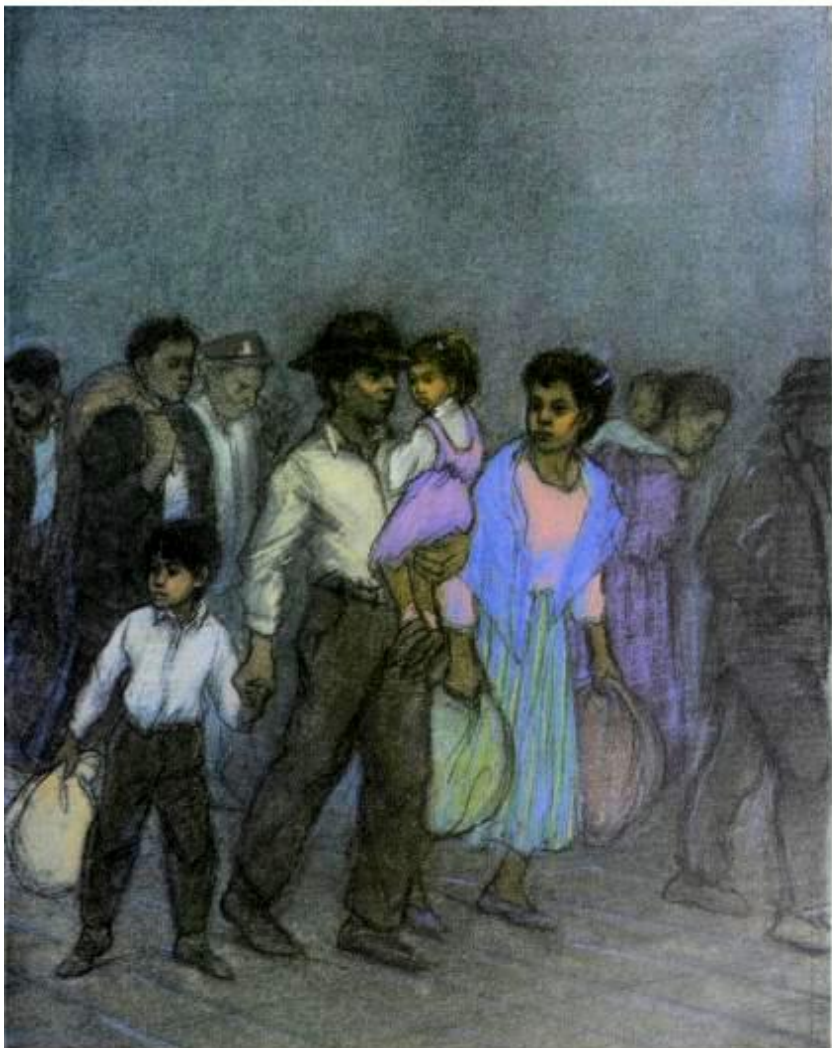




“अमरीका” शब्द मेरे लिए नया नहीं था. उस दर्दभरी रात को मैंने अपने माता-पिता की बातचीत में कई बार “अमरीका” शब्द सुना था. अमरीका – क्या हम वहां जा रहे थे? कुछ अन्य लोग भी चुपचाप उस रहस्यमयी सड़क पर चल रहे थे.







बंदरगाह पर नावें पानी में ऊपर-नीचे हिल रही थीं. कई लोगों के हाथ उनकी पीठ के पीछे छिपे थे. उस दिन कई लोगों के सोने के जेवर एक जेब से दूसरी जेब में गए होंगे.

“मुझे शादी वाली अंगूठी दो,” पिताजी ने माँ से कहा, “और गहरे लाल मूंगों वाला हार भी.”

माँ ने अपनी उंगली से अंगूठी निकाली और पर्स से हार निकालकर पिताजी को दिया. माँ ने एक शब्द भी नहीं कहा.

पिताजी ने कहा कि हम लोग रात के अँधेरे में ही निकल जायेंगे.

“अमरीका, पहुँचने में कितने दिन लगेंगे?” मेरी छोटी बहन ने पूछा.

“ज्यादा दिन नहीं,” मेरे पिताजी ने कहा. “घबराओ मत.”

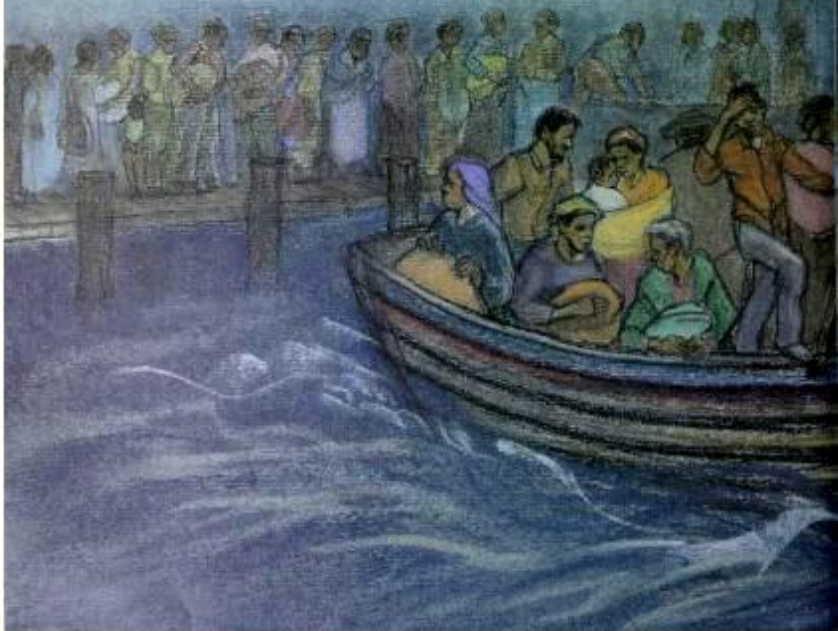




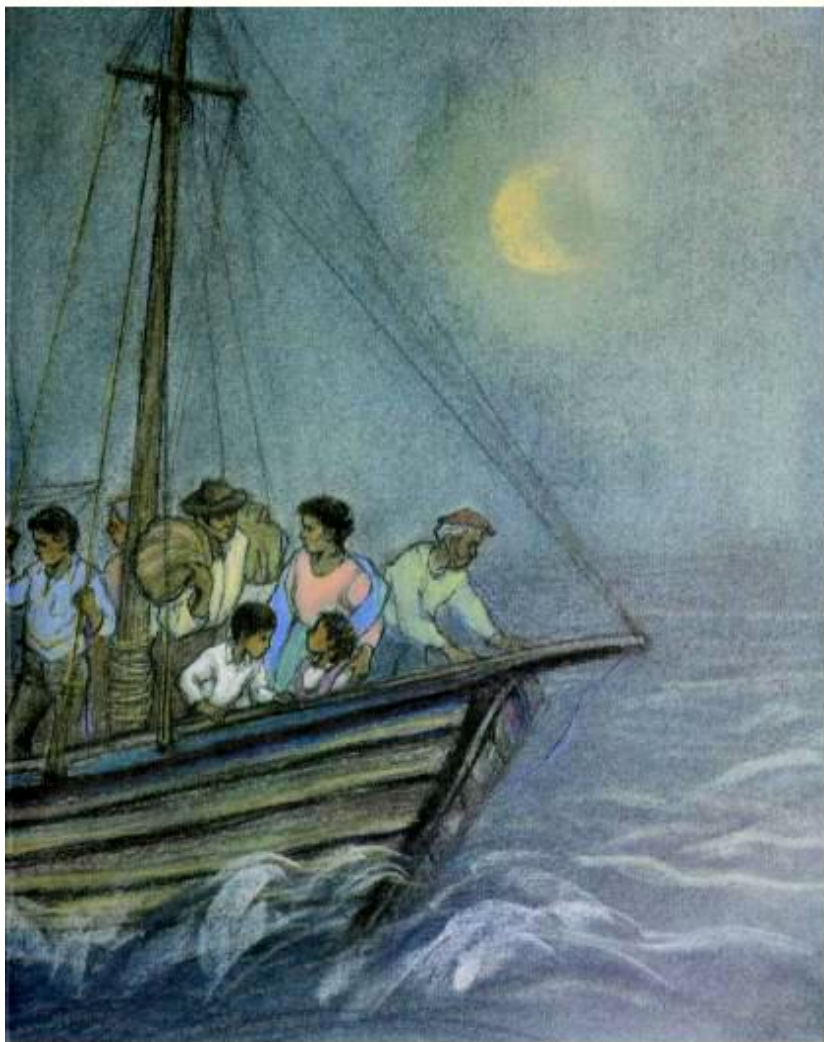
मछली पकड़ने वाली नाव छोटी थी और उसमें बहुत से लोग सवार थे। और लोग लगातार आ रहे थे। हम बंदरगाह से अब खुले समुद्र में आ गए थे।

“क्या यहाँ से हम अमरीका देख सकते हैं, पापा?” मेरी छोटी बहन पिताजी से लगातार यह सवाल पूछ रही थी।

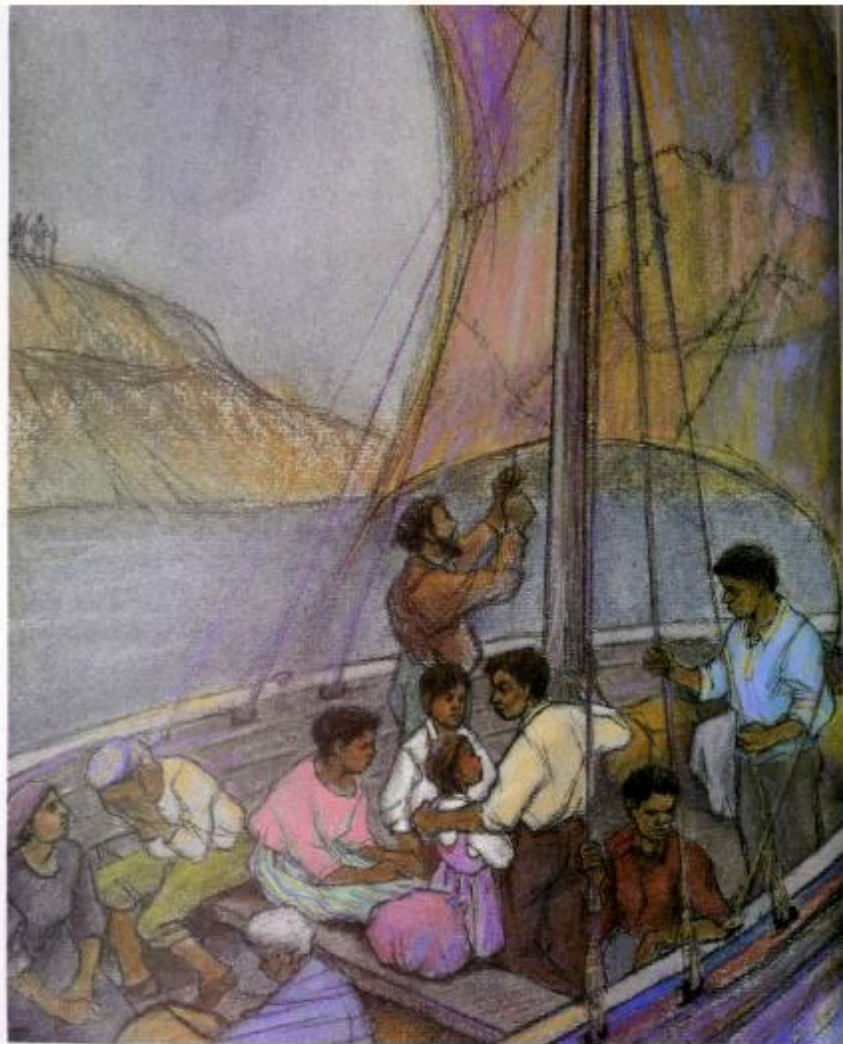
“अभी नहीं,” पिताजी ने उत्तर दिया।

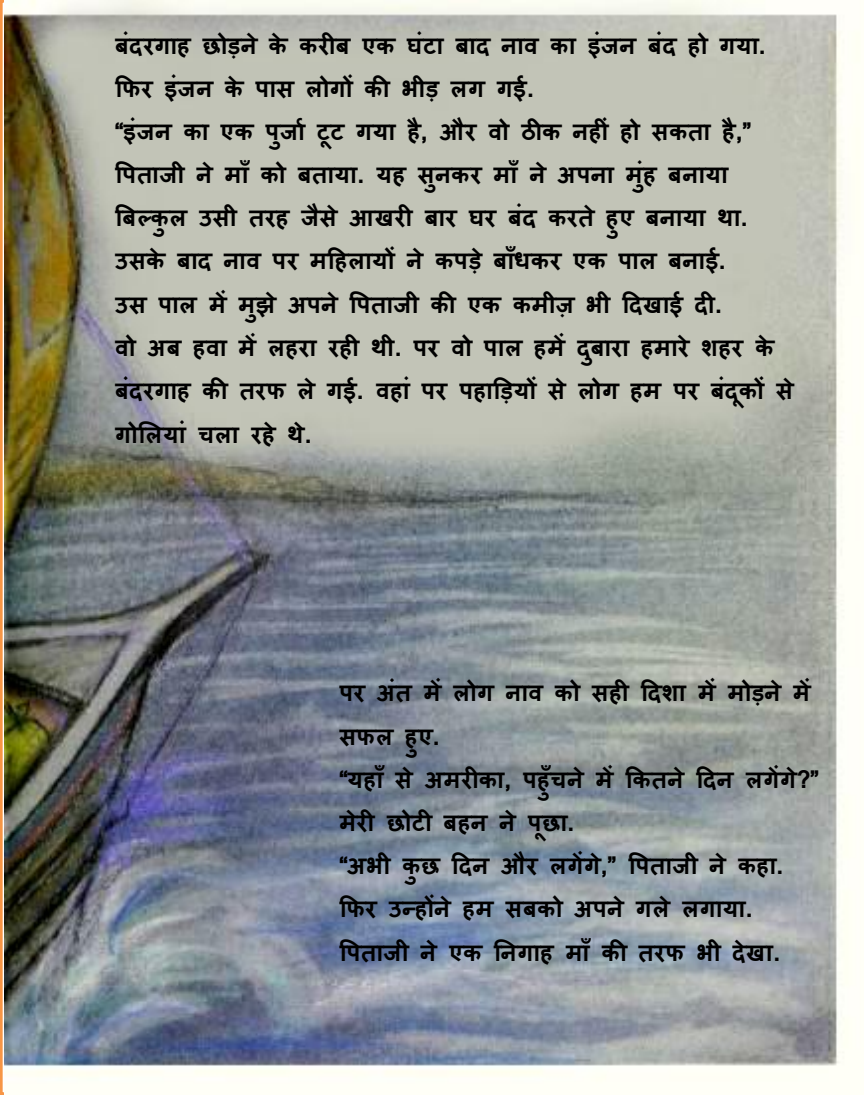












बंदरगाह छोड़ने के करीब एक घंटा बाद नाव का इंजन बंद हो गया।  
फिर इंजन के पास लोगों की भीड़ लग गई।

“इंजन का एक पुर्जा टूट गया है, और वो ठीक नहीं हो सकता है,”  
पिताजी ने माँ को बताया। यह सुनकर माँ ने अपना मुँह बनाया  
बिल्कुल उसी तरह जैसे आखरी बार घर बंद करते हुए बनाया था।  
उसके बाद नाव पर महिलायों ने कपड़े बाँधकर एक पाल बनाई।  
उस पाल में मुझे अपने पिताजी की एक कमीज़ भी दिखाई दी।  
वो अब हवा में लहरा रही थी। पर वो पाल हमें दुबारा हमारे शहर के  
बंदरगाह की तरफ ले गई। वहां पर पहाड़ियों से लोग हम पर बंदूकों से  
गोलियां चला रहे थे।

पर अंत में लोग नाव को सही दिशा में मोड़ने में  
सफल हुए।

“यहाँ से अमरीका, पहुँचने में कितने दिन लगेंगे?”  
मेरी छोटी बहन ने पूछा।

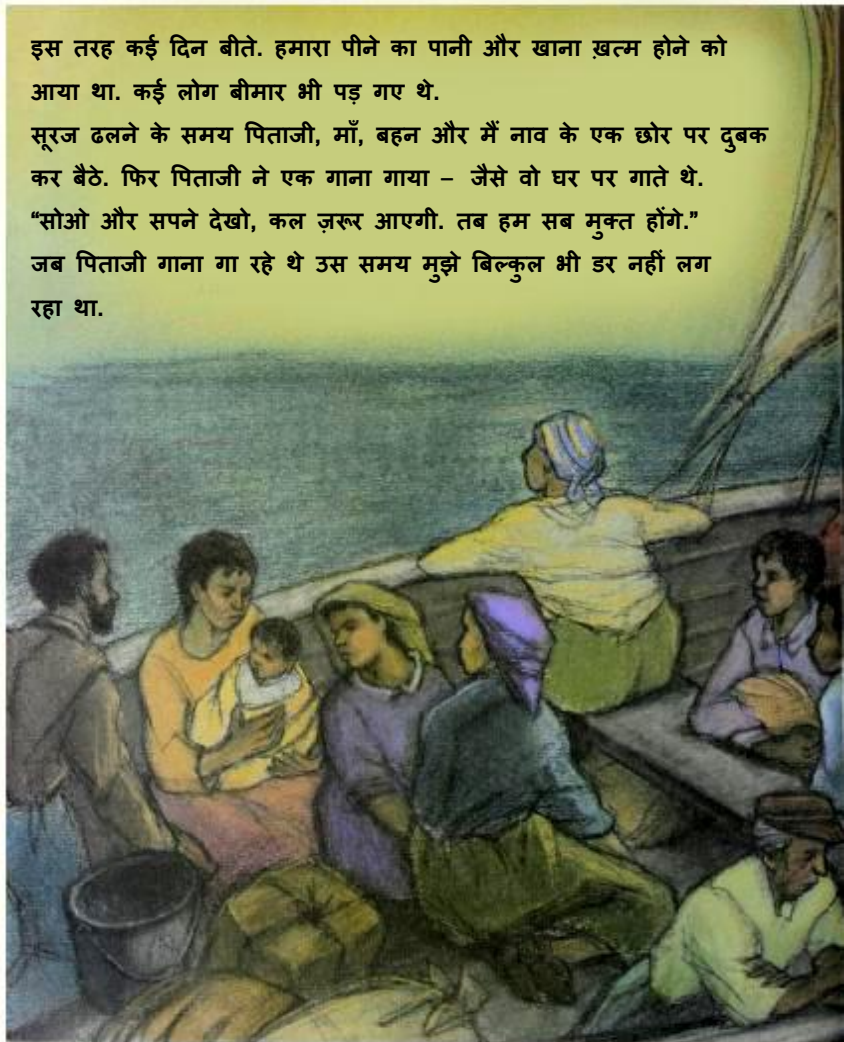
“अभी कुछ दिन और लगेंगे,” पिताजी ने कहा।  
फिर उन्होंने हम सबको अपने गले लगाया।  
पिताजी ने एक निगाह माँ की तरफ भी देखा।

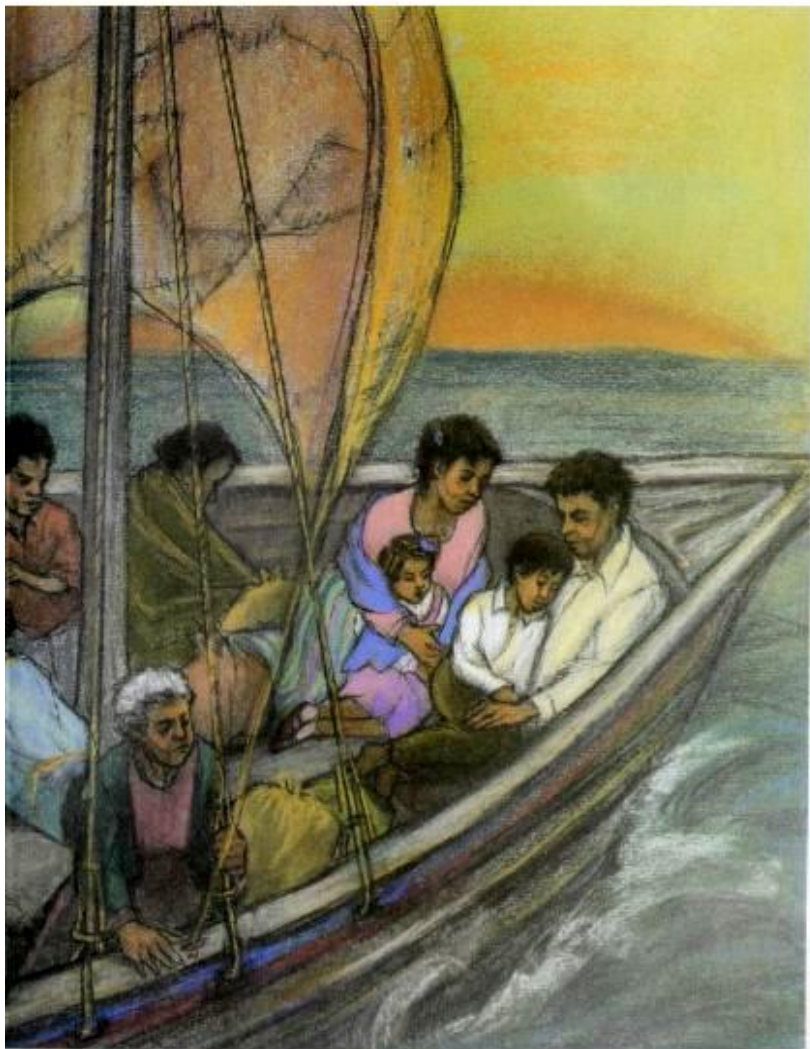
इस तरह कई दिन बीते. हमारा पीने का पानी और खाना खत्म होने को आया था. कई लोग बीमार भी पड़ गए थे.

सूरज ढलने के समय पिताजी, माँ, बहन और मैं नाव के एक छोर पर दुबक कर बैठे. फिर पिताजी ने एक गाना गाया – जैसे वो घर पर गाते थे.

“सोओ और सपने देखो, कल ज़रूर आएगी. तब हम सब मुक्त होंगे.”

जब पिताजी गाना गा रहे थे उस समय मुझे बिल्कुल भी डर नहीं लग रहा था.











उस दिन हमने कुछ मछलियाँ पकड़ीं और उन्हें दूसरे लोगों के साथ मिलकर खाईं. जब कुछ देर बारिश हुई तब हमने बाल्टियों में पीने का पानी भरा. मैं सोता रहा और सपने देखता रहा – अपने घर के, अच्छे भोजन के. मैं सपने देखता रहा अपने प्रिय चाचा के जो पिताजी के साथ दुकान में काम करते थे. चाचा हमारे साथ नहीं आए थे. जब कभी मैं रोता तो माँ मुझे गोद में लेकर झुलाती थीं.

हमें समुद्र में एक व्हेल भी दिखाई दी. व्हेल बिल्कुल हाथी के रंग की थी और उससे पूरे शरीर पर काँटों वाले जीव चिपके थे.

“व्हेल हमारी मदद करो!”, माँ ने उससे प्रार्थना की,

“हमारी नाव को धकेलो जिससे कि वो अमरीका पहुँच जाए.”

पर व्हेल को माँ की प्रार्थना सुनाई ही नहीं दी.



एक दिन तेज़ स्पीड से चलती हुए एक नाव हमारे पास आई.  
उसके चारों ओर फेन और झाग था. नाव को देखकर हमारा दिल खुशी  
से उछलने लगा.

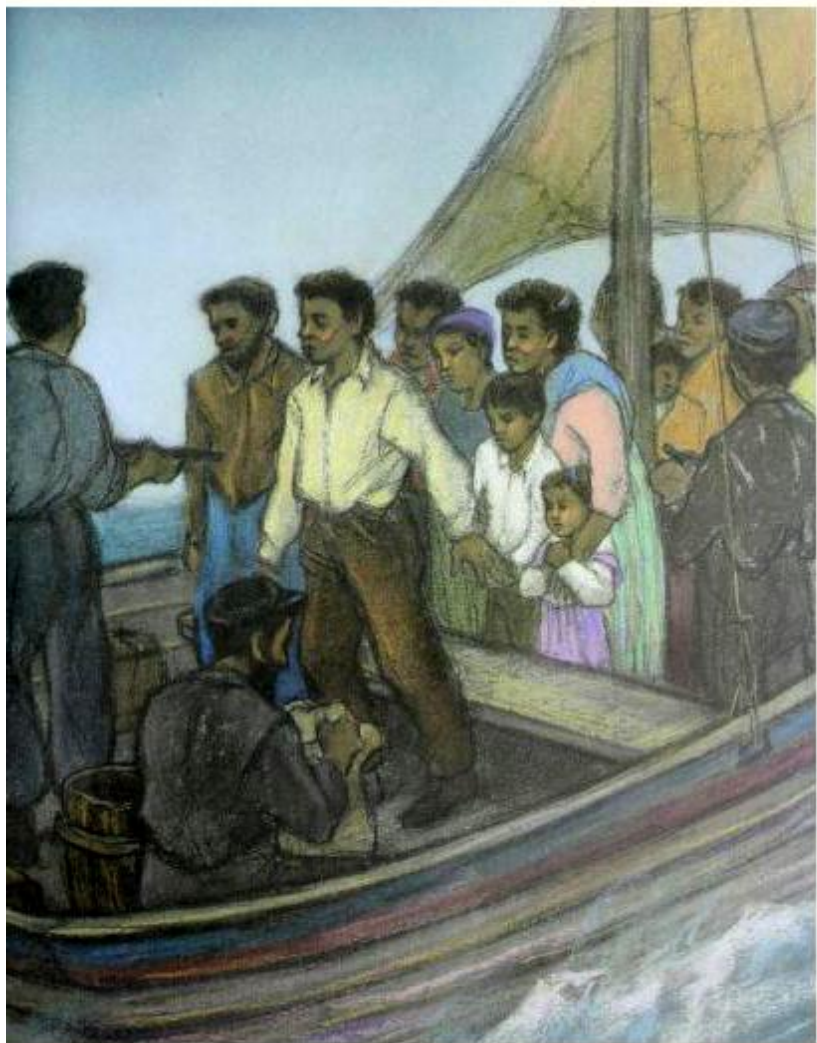
पर ज्यादा वक्त के लिए नहीं.

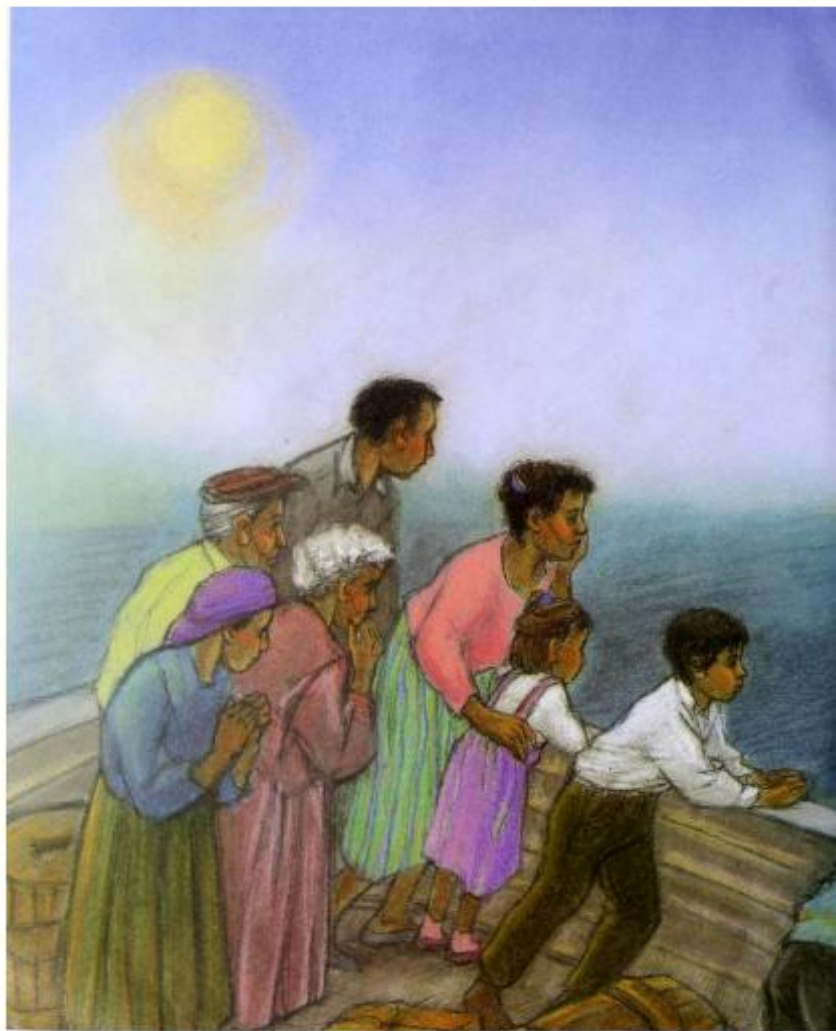
“चोर!” कोई चिल्लाया. फिर हम लोग डर से सहम गए.

उस नाव में से कुछ लोग हमारी नाव में चढ़े. उनके हाथों में बंदूकें  
और चाकू थे. वे पैसे और जेवर देने के लिए चीख-चिल्ला रहे थे.

लोगों के पास अब देने को कम ही बचा था. पर जो कुछ भी बचा था  
उसे वे चोर ले गए.







फिर एक दिन हमें “ज़मीन” की चिल्लाहट सुनाई दी. उसे सुनते ही हम नाव की रेलिंग के पास आकर खड़े हो गये. नाव ने अब अपना पाल तान दिया. पर नाव समुद्र के तट की ओर नहीं बढ़ी.

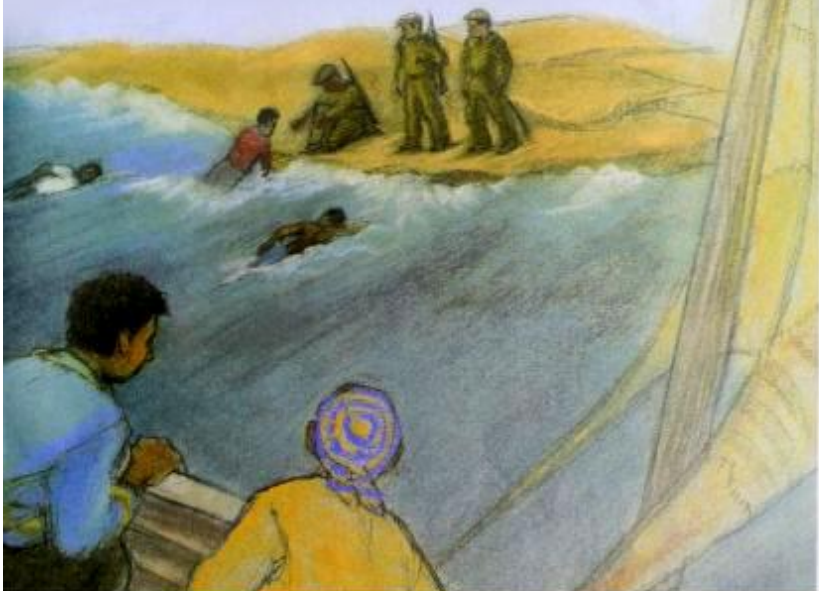
“हमें मदद के लिए तैरना पड़ेगा,” पिताजी ने कहा. फिर पिताजी अन्य दो लोगों के साथ पानी में कूदे.

“नहीं!” माँ चिल्लाई. पर वो अब तट की ओर बढ़ चले थे.

जब हमने उन्हें समुद्र से निकलकर रेत पर खड़े देखा, तो हम लोग खुशी से नाचने लगे. पर वहां तट के पत्थरों पर सिपाही तैनात थे.

नाव में सब लोग चुप थे. माँ ने मेरे हाथ को कसकर पकड़ा.

“वे पिताजी और अन्य लोगों को वापिस ला रहे हैं,” माँ ने फुसफुसाकर कहा.



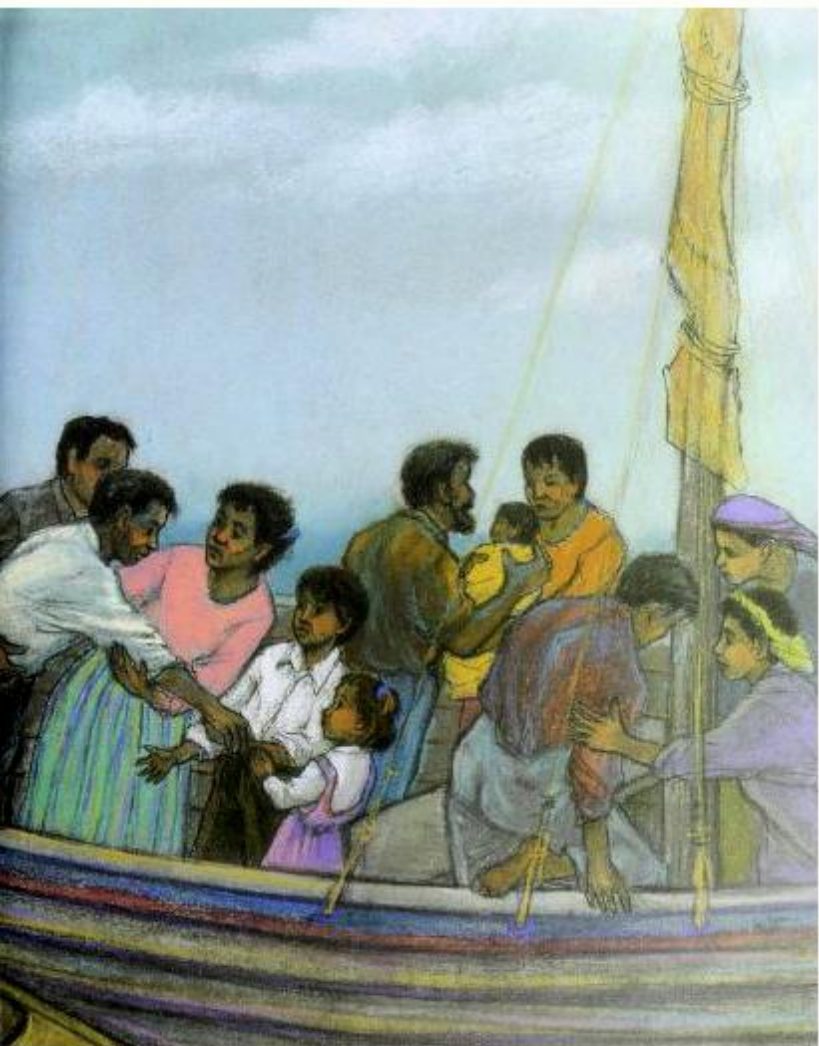


एक छोटी नाव में तीन सिपाही अपनी बंदूकों से साथ आए. वो हमारे लिए पानी और फल लाए थे. पर वो हमें देखकर मुस्कराए नहीं. खाने की चीज़ें उन्होंने हमारी तरफ़ फेंकीं.

“क्या हम सही जगह नहीं पहुंचे, पापा?” मैंने सिपाहियों के जाने के बाद पिताजी से पूछा. “क्या हम किसी गलत देश में पहुंचे हैं?”

“नहीं हम सही देश में आए हैं. पर वे हमें लेंगे नहीं,” पिताजी ने कहा. फिर बहन ने पिताजी का हाथ खींचा. “क्या वे हमें पसंद नहीं करते हैं?” “नहीं ऐसी बात नहीं है.” पर यह बात पिताजी ने विस्तार से नहीं बताई.





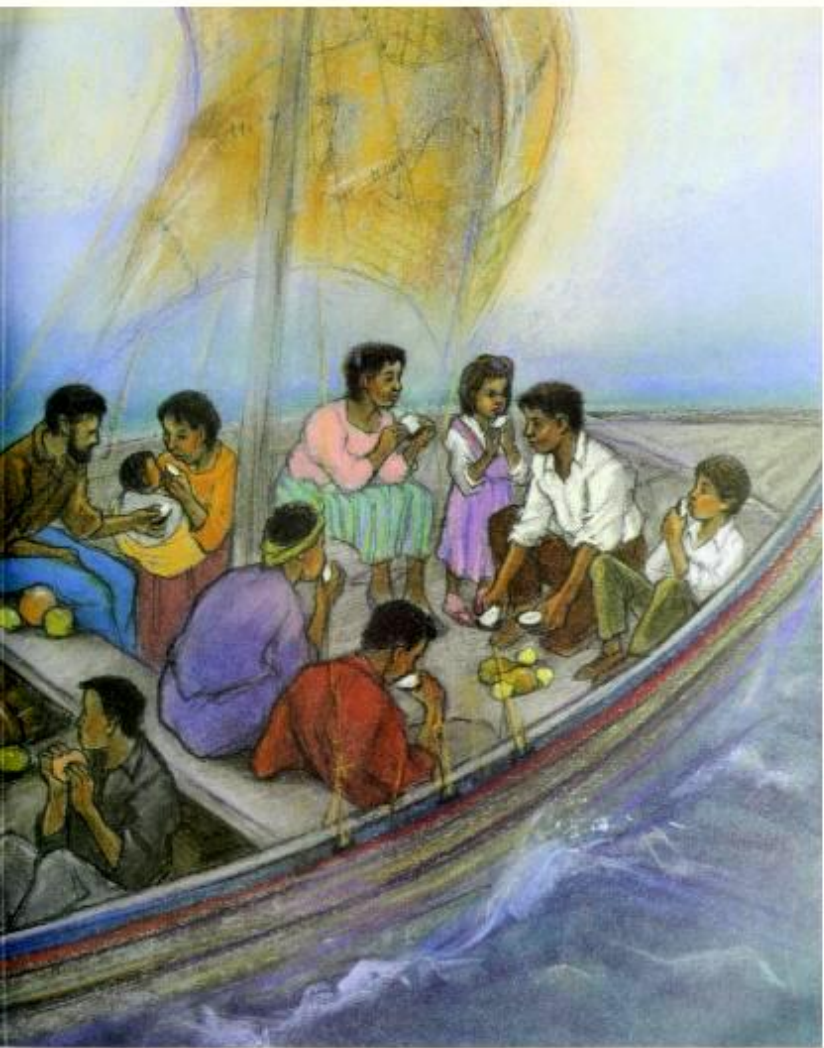
हमारे परिवार को दो पपीते, तीन नीबू और एक नारियल मिला  
जिसका पानी एकदम अमृत जैसा मीठा था.

उस दिन समुद्र में हल्का सा तूफ़ान आया जिससे पिताजी का गाना  
तेज़ हवा में कहीं खो गया. मैंने उस गीत के बोल दोहराए. धीरे-धीरे  
क्षितिज में डूबे तारे हमारे सिर के ऊपर आ गए.

“कल ज़रूर आएगी! कल ज़रूर आएगी!

और तब हम सब मुक्त होंगे.”





किसी तरह अगले दो दिन और बीते. एक बार फिर हमें “ज़मीन” दिखाई दी. मुझे अब उम्मीद से भी डर लगने लगा था.

एक नाव आई. मेरी माँ ने अपने हाथ कसकर जोड़े और अपने सिर को नीचे झुकाया. उन्हें भी अब कोई उम्मीद नहीं बची थी.

नाव ने दो बार हमारी नाव की परिक्रमा लगाई. फिर उन्होंने हमारी ओर एक रस्सी फेंकी और हमें तट तक खींचकर ले गए.

उस समय सभी लोग चुप और घबराए थे. सभी की जुबानों पर ताला लगा था.

उस बंदरगाह पर कुछ लोग उनका इंतज़ार कर रहे थे.

“स्वागत है!” वे चिल्लाए. “अमरीका में आपका स्वागत है!”

तब हमारी चुप्पी, चीखों में बदली.

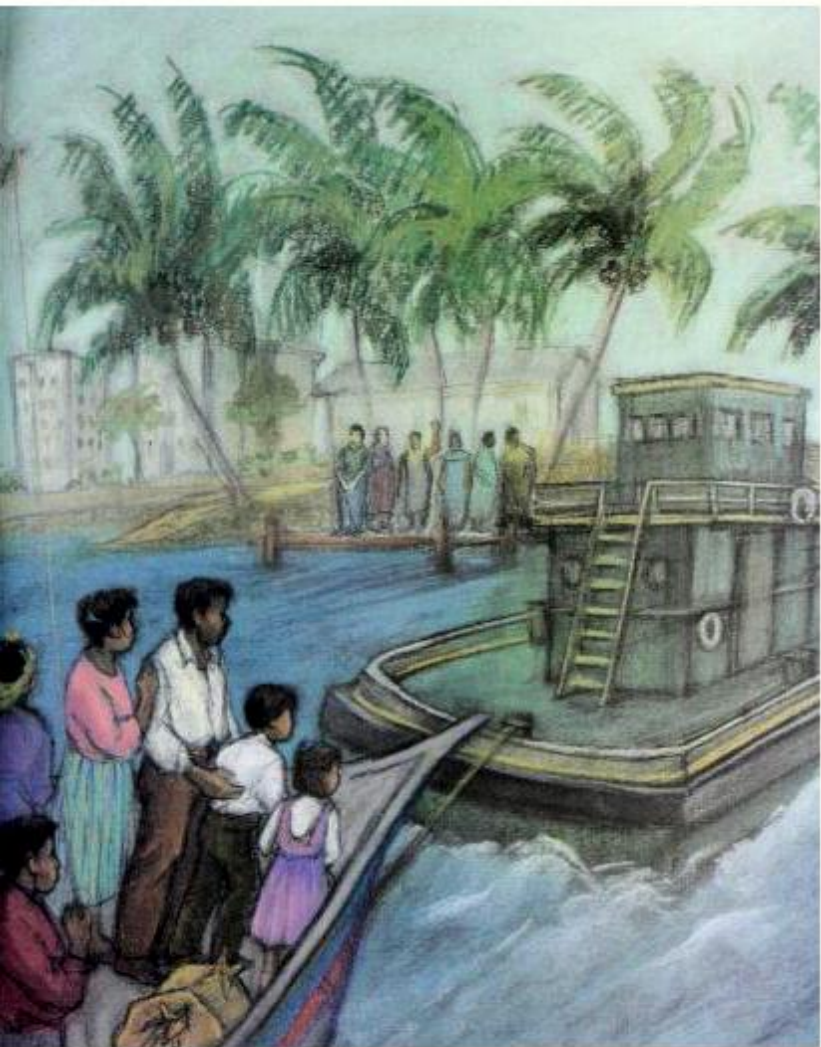
“पर उन्हें यह कैसे पता चला कि हम वहां आज पहुंचेंगे?” पिताजी ने पूछा.

“शायद वहां रोजाना ही हम जैसे लोग आते होंगे,” माँ ने कहा.

“शायद वो हम जैसे लोगों की परिस्थितियों से वाकिफ होंगे.”





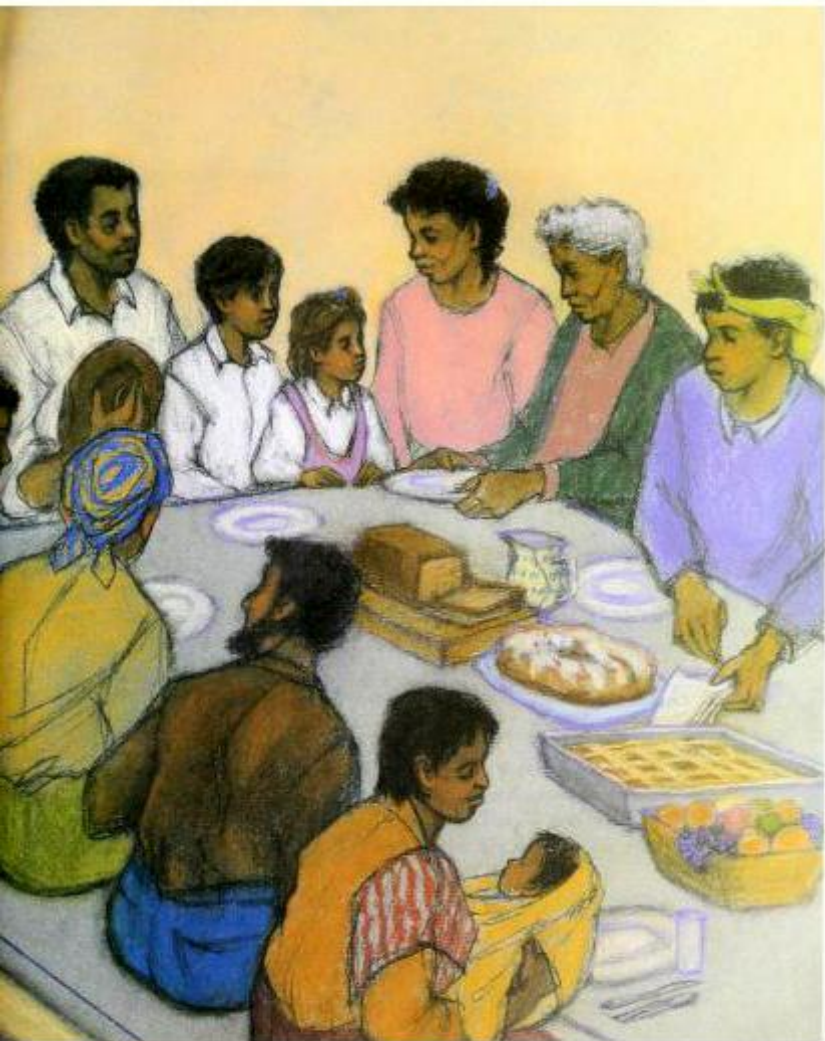


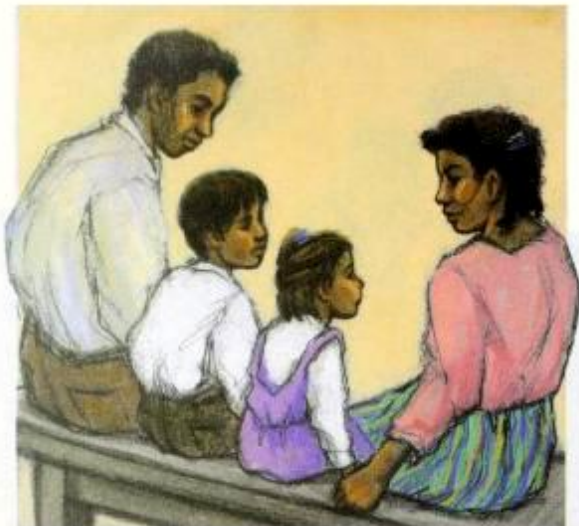
ज़मीन पर एक शेड था जिसकी टीन की छत सूरज की गर्मी से तप रही थी।  
वहां पर कई मेजों पर खाना सजा था। मेजों के पास सबके बैठने के लिए बेंच थीं।  
“तुम्हें पता है कि आज क्या दिन है?” एक महिला ने प्लेट थमाते हुए पूछा।  
“हमारे लिए आज - अमरीका पहुँचने वाला शुभदिन है,” मैंने कहा।  
वो महिला मुस्कुड़ाई। “आज का दिन वाकई में एक खास दिन है।  
आज “थैंक्स-गिविंग” का दिन है।”

“वो क्या होता है?” मेरी छोटी शर्मिली बहन ने पूछा।

“बरसों, पहले यहाँ पर अलग-अलग देशों से कई बदनसीब लोग एक नई ज़िन्दगी  
बिताने के लिए आए थे,” उस महिला ने कहा। “इसलिए वे लोग अपना शुक्रिया  
अदा करते हैं।” पिताजी ने सहमति में अपना सिर हिलाया और कहा, “जश्न  
मनाने का यही सही तरीका है।”







फिर पिताजी ने लोगों का अपने दिल से शुक्रिया अदा किया.  
उस समय हम लोग अपने हाथ जोड़े और आँखें बंद करके खड़े रहे.  
अब हम लोग वाकई में सुरक्षित और मुक्त थे.  
“क्या हम यहाँ रह सकते हैं, पापा?” मेरी छोटी बहन ने पूछा.  
“हाँ, बेटी,” पिताजी ने उत्तर दिया. “हम यहाँ पर रह सकते हैं.”



सिपाहियों के जाने के बाद पिताजी ने परिवार के लोगों से कहा.

“हमें यहाँ से तुरंत चले जाना चाहिए.”

“क्यों?” लड़के ने पूछा.

“क्योंकि हम उन लोगों की तरह नहीं सोचते हैं, बेटा. चलो, जल्दी करो!”

